अधिगम के प्रतिफल और आकलन

आँचल चोमल

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने विद्यार्थी-अधिगम को काफ़ी बाधित किया है। शैक्षिक संस्थानों ने निर्बाध शिक्षण सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न ऑनलाइन विकल्पों की खोज की है। पर ऐसे अनेक सबूत उपलब्ध हैं जो यह बताते हैं कि दूरस्थ शिक्षा विकल्प कारगर नहीं हैं। शिक्षा एक गहन एवं घनिष्ठ प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी और सहपाठियों के बीच पूछताछ, खोज व अर्थ-निर्माण जैसे कार्यकलाप होते हैं। अधिगम को सम्भव बनाने के लिए वैयक्तिकरण और सहयोग आवश्यक है। इसके साथ इंटरनेट और स्मार्टफोन की अपर्याप्त उपलब्धता के कारण ऑनलाइन समाधान अव्यावहारिक विकल्प बन जाते हैं।

पिछले कुछ महीनों में विभिन्न राज्य सरकारों, जैसे कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश ने सीखने की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए *विद्यागमा, पढ़ाई तुहार द्वार और हमारा घर-हमारा विद्यालय* जैसे समुदाय-आधारित अधिगम कार्यक्रम शुरू किए हैं। देश भर के कई अन्य राज्यों में, कई प्रतिबद्ध शिक्षक मोहल्ला कक्षाओं जैसे अनोखे समाधानों के साथ नवाचार आज़मा रहे हैं। इसमें पूर्व विद्यार्थियों के नेटवर्क और समुदाय के बड़े बच्चों आदि की मदद से विद्यार्थियों को आमने-सामने बैठकर सीखने के अवसर दिए जा रहे हैं। लेकिन कुछ बच्चों के लिए केवल ऑनलाइन कक्षाएँ ही एकमात्र व्यावहारिक विकल्प हैं।

तो स्कूल भले ही सीखने की किसी भी विधा का प्रयोग क्यों न कर रहे हों, वे सभी इस साल जिन सामान्य प्रश्नों के साथ जूझ रहे हैं, वे इस प्रकार हैं :

- स्कूल यह कैसे तय करें कि क्या पढ़ाया जाए? बच्चों के जुड़ाव के लिए किस तरह की गतिविधियों का उपयोग किया जाना चाहिए?
- यह कैसे पता चलेगा कि विद्यार्थी कैसे सीख रहे हैं और क्या उनके सीखने में कोई कमी है?

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रत्येक शिक्षक के दिमाग़ में चल रहे इन प्रश्नों के उत्तर सरल नहीं हैं। फिर भी कुछ व्यावहारिक समाधान तलाशे जा सकते हैं। इन समाधानों को मोटे तौर पर चार भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. अधिगम प्रतिफलों का प्राथमिकताकरण

पहली कक्षा की भाषा या गणित की पाठ्यपुस्तक में 10 से 15 अध्याय होते हैं। उच्चतर कक्षाओं में अध्यायों की संख्या बढ़ जाती है। इस शैक्षिक वर्ष में सभी अध्यायों को पढ़ाना व्यावहारिक रूप से असम्भव है। ऐसे में किन अध्यायों का चयन किया जाए, यह तय करने के लिए शिक्षक कक्षा विशेष के लिए निर्धारित कुछ मुख्य या मूलभूत अधिगम प्रतिफलों की पहचान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक स्तर पर कक्षा I-V के लिए भाषा में निम्नलिखित अधिगम प्रतिफल को प्राथमिकता दी जा सकती है (अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, 2020)।

भाषा I-II	**भाषा III-V**
क. सुनकर समझने और ध्वनियों तथा शब्दों के बीच सम्बन्ध का कौशल विकसित करना। ख. पढ़ने और लिखने का बुनियादी कौशल विकसित करना। ग. परिवेश में घटने वाली घटनाओं को समझना और उन्हें मौखिक रूप से व्यक्त करना।	क. स्वतंत्र रूप से पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित करना। ख. कविता, कहानी, नोटिस बोर्ड, पोस्टर आदि में प्रस्तुत पाठ्य सामग्री को समझने की क्षमता विकसित करना। ग. मौखिक और लिखित दोनों रूपों में आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना। घ. भाषा की मूल संरचना को समझना और इसे लेखन में लागू करना।

भाषा में जितने भी उन्नत अधिगम हैं, ये अधिगम प्रतिफल उनकी नींव का निर्माण करते हैं और इसलिए, इनको प्राथमिकता देने से शिक्षक को मूलभूत साक्षरता को सम्बोधित करने में मदद मिलेगी। प्राथमिक स्तर पर अन्य सभी विषयों के लिए इसी प्रकार का प्रयत्न करना चाहिए। उच्च प्राथमिक चरण के लिए, उन अधिगम प्रतिफल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो विषय की अवधारणात्मक समझ विकसित करने में मुख्य हैं।

अधिगम प्रतिफल का चयन हो जाने के बाद, शिक्षक उन्हें सम्बोधित करने के लिए पाठ्यपुस्तक से एक या दो इकाइयों का चयन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा I और II के विद्यार्थियों में पढ़ने के बुनियादी कौशल को विकसित करने के लिए शिक्षक पाठ्यपुस्तक की विभिन्न इकाइयों से विभिन्न प्रकार के छोटे हिस्से चुन सकते हैं। ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि विद्यार्थी शब्द की ध्वनियों के साथ परिचित हों, कहानी/कविता के पात्रों के साथ जुड़ें, सस्वर पठन का अभ्यास करें, अपने स्वयं के शब्दों में पाठ की व्याख्या करें आदि। अधिगम प्रतिफल और सामग्री के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हो तो कक्षा के दौरान सामंजस्यता के विकास में मदद मिलेगी।

चयनित अधिगम प्रतिफल केवल संज्ञानात्मक क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं होने चाहिए। इस समय में संवेदनशीलता, दूसरों की परवाह करना, लचीलापन और समानुभूति का विकास करने वाले प्रतिफलों का पोषण बहुत महत्त्वपूर्ण है। स्वास्थ्य और स्वच्छता बनाए रखना, सार्वजनिक स्थानों पर सावधानियाँ बरतना, स्वच्छता सम्बन्धी व्यक्तिगत शिष्टाचार जैसे प्रतिफलों को भी पर्याप्त महत्त्व दिया जाना चाहिए।

यदि एक शिक्षक कई विषय पढ़ाते हों तो वे परिवार, पर्यावरण जैसी तीन या चार ऐसी थीमें चुन सकते हैं जिन्हें आपस में जोड़ा जा सके और फिर वे प्रत्येक विषय में से कुछ अधिगम प्रतिफल की पहचान कर सकते हैं। इसके बाद वे अपने पाठों की योजना इस तरह से बना सकते हैं कि वे विभिन्न विषयों की सामग्री को एकीकृत कर सकें। उदाहरण के लिए, कक्षा III के शिक्षक भाषा और पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तकों के पाठों को एकीकृत कर सकते हैं। इससे न केवल सामग्री का बोझ कम होगा, बल्कि अधिगम प्रतिफल को एकीकृत और व्यापक रूप से सम्बोधित करने में भी मदद मिलेगी।

2. उपयुक्त शैक्षणिक रणनीति का चयन

शिक्षार्थी और शिक्षक की आपसी प्रत्यक्ष अन्तःक्रिया सीमित हो गई है, इसलिए जो थोड़ा-बहुत समय मिलता है उसे अधिक सार्थक बनाना महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों के सीखने की कमियों को पहचानकर उन्हें ऐसी पाठ योजनाओं के माध्यम से सम्बोधित करने पर ध्यान देना चाहिए जिन्हें व्यवस्थित रूप से विकसित किया गया हो। ऐसी योजनाएँ जो स्पष्ट रूप से यह बताएँ कि कौन-से पाठ पढ़ाने हैं, उनमें किन संसाधनों का उपयोग किया जाएगा, कौन-सी गतिविधियाँ संचालित की जाएँगी और कौन-से अनुवर्ती कार्य दिए जाएँगे। ध्यानपूर्वक उन हिस्सों पर ज़ोर देना चाहिए जिनके साथ विद्यार्थी जूझ रहे हैं या पिछली कक्षाओं की उन (पूर्व-अपेक्षित) अवधारणाओं पर जिन्हें विद्यार्थी ठीक से समझ नहीं पाए हैं।

अधिकतर मामलों में अनुदेशात्मक रणनीति ऑनलाइन, ऑफ़लाइन और स्व-अधिगम का एक संयोजन होगी। इनमें से प्रत्येक तरीक़े का उपयोग विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए, फिर चाहे वह ऑनलाइन हो या आमने-सामनेवाला शिक्षण। उसमें नई अवधारणा को पर्याप्त उदाहरणों के साथ समझाने पर ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए, पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक विद्यार्थी-अन्तःक्रिया का उपयोग यह सिखाने के लिए कर सकते हैं कि पौधे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से भोजन कैसे बनाते हैं। प्रदत्त कार्य के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की शंकाओं को सुनकर उनका निवारण कर सकते हैं, या फिर विद्यार्थी जो कार्य कर रहे हैं, उससे जुड़ी हुई मूलभूत अवधारणा के साथ सक्रिय रूप से जुड़ सकते हैं। तरीक़ा कोई भी हो, इन कक्षाओं को विद्यार्थियों को दिए गए स्व-अधिगम कार्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अध्याय या अध्याय के उन चयनित पृष्ठों को पढ़ना जो अवधारणा के बारे में बताते हैं या उस अवधारणा की वर्कशीट पर कार्य करना। वर्कशीट को हल करने/कार्यों को करने के निर्देश स्पष्ट रूप बताए जाने चाहिए। बाद की कक्षाओं में सीखने की प्रक्रिया में निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए दिए गए गृहकार्यों पर चर्चा की जानी चाहिए।

बड़ी कक्षाओं के लिए नए विषयों का परिचय खोजपूर्ण परियोजनाओं और सर्वेक्षणों के माध्यम से भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, लोकतंत्र पर अध्याय पढ़ाने से पहले, शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों से उनके निर्वाचन क्षेत्र के सभी निर्वाचित सांसदों के नाम, उनकी भूमिकाओं और उनके क्षेत्र के अनसुलझे मुद्दों आदि के बारे में पूछ सकते हैं। जब विद्यार्थी इस जानकारी को एकत्र करके एक सर्वेक्षण रिपोर्ट तैयार कर लें तब शिक्षक इसका उपयोग लोकतंत्र में शक्ति के सहभाजन की अवधारणा को पेश करने के लिए कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया के दौरान शिक्षक को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि वे वैश्विक महामारी के दौरान हुए अपने व्यक्तिगत अनुभवों और चुनौतियों को साझा करें। फिर समूह में इन पर चर्चा भी करनी चाहिए। विद्यार्थियों को सुनना, उन्हें यह बताने के अवसर देना कि वे क्या सोचते हैं और कैसा महसूस करते हैं, पहले से कहीं आज ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक एक-दूसरे के सहयोग से गीतों, कहानियों, लघु वीडियो, पज़ल्स/गेम, वर्कशीट जैसी संसाधन सामग्रियों का सामान्य भण्डार बना सकते हैं। इसका उपयोग वे विद्यार्थियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए कर सकते हैं। सामूहिक रूप से किए जाने वाले कार्यों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ काम कर सकें और उन्हें पूरा करने में अपने व्यक्तिगत अनुभवों का लाभ उठा सकें।

3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आकलन को एकीकृत करना

इस अवधि में आकलनों का नियोजन, डिज़ाइनिंग और उपयोग काफ़ी पेचीदा हो सकता है। कक्षा आकलनों का उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम में सुधार लाना होना चाहिए। इनके द्वारा शिक्षकों को विद्यार्थियों के अधिगम के स्तर और उनकी अपनी शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता के बारे में जानकारी मिलनी चाहिए। ऐसा कोई भी आकलन जो केवल विद्यार्थी का *मूल्यांकन या उसके बारे में निर्णय* करता है, तनाव और चिन्ता का कारण बन सकता है, इसलिए इससे पूरी तरह से बचना चाहिए। वर्तमान समय में जब विद्यार्थियों के अधिगम में इतनी सारी रुकावटें आ रही हैं, तब विद्यार्थियों को डराने वाली परीक्षाओं से दूर रखना ही श्रेयस्कर है!

इसलिए निर्माणात्मक आकलन अधिक करने चाहिए। इन्हें अनुदेशात्मक प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। छोटे क्विज़, गेम्स, ओपन-एंडेड प्रश्नों के साथ अन्तःक्रियात्मक चर्चाएँ आदि कुछ ऐसी रणनीतियाँ हैं जिन्हें अपनाकर शिक्षक अपनी शिक्षण विधि की प्रभावशीलता के बारे में शीघ्र अन्दाज़ा लगा सकते हैं। हो सकता है कि बच्चे समय की कमी के कारण शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सटीक उत्तर न दे पाएँ। ऐसी स्थिति में शिक्षक को विद्यार्थियों के उत्तरों को ध्यान से सुनना चाहिए। इससे उन्हें पता चलेगा कि विद्यार्थियों को क्या समझ में नहीं आया है तथा उसके बाद वे अपने शिक्षण की योजना अधिक प्रभावी ढंग से बना सकते हैं।

ऐसे प्रामाणिक आकलनों को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों को सार्थक तरीके से अपने अधिगम का प्रदर्शन करने दें। इसके लिए परियोजनाओं, प्रदत्त कार्यों तथा सर्वेक्षण का उपयोग किया जा सकता है। पहले से तय की गई परियोजनाओं की बजाय शिक्षक विद्यार्थियों के साथ चर्चा करके उनके विषयों के बारे में निर्णय ले सकते हैं। ऐसी परियोजनाओं का भी उपयोग किया जा सकता है जो सभी विषयों से सम्बन्ध रखती हों। उदाहरण के लिए, परिवार के विषय पर काम करते समय कक्षा III के विद्यार्थी एक ऐसी परियोजना पर काम कर सकते हैं, जो भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन के अधिगम प्रतिफल को एकीकृत करता हो।

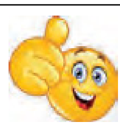
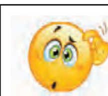
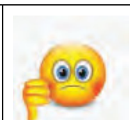
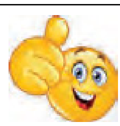
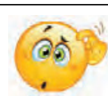
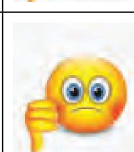
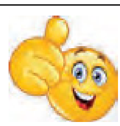
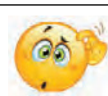
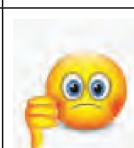
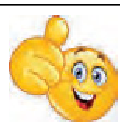
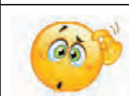
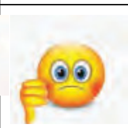
थीम	भाषा	पर्यावरण अध्ययन	गणित
परिवार- कक्षा III, IV, V इन विचारों का उपयोग III, IV या V किसी भी कक्षा के लिए किया जा सकता है। गतिविधियों का एक ऐसा सेट डिज़ाइन किया जा सकता है जिसमें सभी विषय शामिल किए जा सकें। विद्यार्थी इस पर काम करने के लिए 3-4 सप्ताह का समय ले सकते हैं। परियोजना पर विद्यार्थियों के काम के साथ-साथ थीम से जुड़ी सभी अवधारणाओं को पढ़ाया जा सकता है।	अपने परिवार पर लेख लिखना, सदस्यों का विवरण देना जैसे उनके नाम/वे क्या करते हैं। बड़े विद्यार्थियों के लिए मेरा परिवार विषय पर - निबन्ध लेखन या निर्देशित अनुच्छेद लेखन।	परिवार के सदस्यों के नाम के साथ उनके चित्र। वंश-वृक्ष भी बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को अपने घरों और आसपास के स्थानों का चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। उन्हें अपने घरों के आसपास के पौधों, जानवरों, जल निकायों और बस स्टॉप, गौशाला, डाकघर जैसी संरचनाओं के नाम बताने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।	बच्चों से अपने परिवार के सभी सदस्यों की उम्र, वज़न और ऊँचाई को नोट करके उसे तालिकाबद्ध करने के लिए कहा जा सकता है। वे अपने परिवार के सदस्यों द्वारा की जाने वाली कुछ प्रमुख गतिविधियों और उन्हें करने के समय का कैलेंडर बना सकते हैं। उदाहरण के लिए वे सभी सदस्य कब जागते हैं? कब सोते हैं? कुछ बड़े बच्चे यह जानकारी बार ग्राफ में भी दिखा सकते हैं।

इस परियोजना के आकलन के लिए एक रूब्रिक बनाया जा सकता है, जिसके मापदण्ड विद्यार्थियों के साथ मिलकर तय किए जा सकते हैं।

एकीकृत परियोजनाओं के अलावा, शिक्षक विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के साथ वर्कशीट्स का उपयोग भी कर सकते हैं। इन वर्कशीट्स को स्व-अधिगम सामग्री के रूप में ऑफ़लाइन

भरा जा सकता है। शिक्षक को वर्कशीट्स में दिए गए प्रश्नों पर विद्यार्थियों के जवाबों की चर्चा आमने-सामने या ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान करनी चाहिए।

विद्यार्थियों को भी आत्म-आकलन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। छोटे बच्चों के साथ स्माइली और इमोटिकॉन्स वाले सरल आकलन चेकलिस्ट का उपयोग किया जा सकता है। बड़े बच्चों के साथ अधिक विस्तृत चेकलिस्ट का उपयोग किया जा सकता है जो अधिगम के प्रतिफलों और उन पर विद्यार्थियों की निपुणता को निर्दिष्ट करें ताकि उन्हें अपनी प्रगति की निगरानी करने में मदद मिल सके। *अधिगम के रूप में आकलन* वाले दृष्टिकोण का उपयोग करने से शिक्षक इस बात में भी सक्षम होंगे कि वे विद्यार्थियों को अपने अधिगम का उत्तरदायित्व लेने में सशक्त बना सकें।

मेरी आत्म-आकलन चेकलिस्ट			
मुझे कविताएँ सुनाना पसन्द है।			
मुझे चित्र बनाना और उनमें रंग भरना पसन्द है।			
मुझे कंकड़ और पत्तियों की मदद से गिनती करना पसन्द है।			
मुझे पता है कि एक वृत्त कैसा दिखता है।			

ऑनलाइन कक्षाओं में, ई-पोर्टफोलियो बनाए रखने को प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी ई-पोर्टफोलियो में व्यवस्थित रूप से अपने कार्यों का संकलन कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान अपने अधिगम को दर्शा सकते हैं। ऐसा दस्तावेज़ शिक्षक के लिए विद्यार्थियों की प्रगति, उनकी खूबियों और सुधार के सम्भावित क्षेत्रों का विश्लेषण करने के लिए सबूत के रूप में भी काम करेगा।

पोर्टफोलियो में ये बातें शामिल की जा सकती हैं :

- ✓ विद्यार्थियों की वर्कशीट्स
- ✓ परियोजनाएँ
- ✓ शिक्षक द्वारा तैयार किए गए उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड
- ✓ कोई भी स्व-आकलन चैकलिस्ट/विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ

उपर्युक्त कार्यों को करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों में परीक्षाओं को लेकर कोई अनावश्यक तनाव न पैदा हो। इसलिए अंक या ग्रेड देने की बजाय, विद्यार्थियों को समय-समय पर उनके प्रदर्शन पर गुणात्मक टिप्पणियाँ दी जानी चाहिए। साल के अन्त में बच्चों का उत्तीर्ण होना इन गुणात्मक रिकॉर्ड्स पर आधारित होना चाहिए। सामग्री-विशिष्ट क्षेत्रों, कौशलों और प्रवृत्तियों के बारे में विद्यार्थियों की प्रगति का एक व्यापक मूल्यांकन माता-पिता और अभिभावकों के साथ साझा किया जाना चाहिए।

4. माता-पिता और अभिभावकों को शामिल करना

चूँकि आजकल बच्चे घर पर बहुत समय बिता रहे हैं, इसलिए उनके अधिगम में माता-पिता और अभिभावकों को रचनात्मक तरीकों से शामिल करना उपयोगी होगा। एक तरीक़ा यह हो सकता है कि माता-पिता और विद्यार्थियों के साथ कक्षा-उपयुक्त की सूची साझा की जाए। कई राज्यों ने माता-पिता और विद्यार्थियों के लिए अधिगम प्रतिफल पर आधारित आकर्षक पोस्टर तैयार किए हैं (डीएसईआरटी, कर्नाटक, 2018)। यह समय सामग्रियों को सक्रिय रूप से प्रसारित करने के लिए सही रहेगा। विद्यार्थियों को दी गई परियोजनाओं और अन्य दिए गए कार्यों में माता-पिता को सजग रूप से शामिल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बता देना चाहिए कि ये कार्य विद्यार्थियों को पूरे करने हैं, माता-पिता को केवल मदद करनी है। इस बात को बिल्कुल बढ़ावा नहीं देना चाहिए कि वे विद्यार्थी को दिए गए कार्य पूरा करने का प्रयास करें।

अन्त में

शिक्षा में शामिल सभी लोगों के लिए यह वर्ष बहुत कठिन रहा है। इसलिए जब तक स्कूल सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यक प्रोटोकॉल के साथ फिर से खुल नहीं जाते, तब तक जो भी सम्भावनाएँ उपलब्ध हैं, उन्हीं के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ जारी रहेंगी। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया प्रकृति में घनिष्ठ होती है। इसे देखते हुए यह बात महत्त्वपूर्ण है कि सप्ताह में कम से कम एक या दो बार सामुदायिक कक्षाएँ हों, विशेष रूप से प्रारम्भिक वर्षों के बच्चों के लिए। ऐसी सभी अन्तःक्रियाओं में, पाठ्यक्रम को कवर करने या पाठ्यपुस्तकों से पाठों को पूरा करने की बजाय, अधिगम प्रतिफल को सम्बोधित करने पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षाशास्त्र और आकलन के दृष्टिकोण मज़बूत शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित होने चाहिए न कि अपर्याप्त रूप से परिकल्पित अधिगम के समाधानों पर। हमें दृष्टिकोण की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करना होगा। साथ ही व्यवस्थित रूप से ऐसी सभी प्रक्रियाओं का निराकरण करना होगा जो शिक्षा को रोज़मर्रा की प्रक्रियाओं का एक निरर्थक समूह बनाकर रखने ज़िम्मेदार हो सकती हैं।

* Chomal, A. Summary of a panel presentation made at the MTA, 2nd Annual (online) Conference, *Theme- Mathematics Education during the pandemic- Issues, Challenges and Possible Solutions*, 5-6 September 2020.

References

Azim Premji University, 2020, *'Schools in the Times of COVID-19, What Matters and What We Should Do'*, May, 30th, 2020, downloadable at https://azimpremjiuniversity.edu.in/SitePages/pdf/Schools_in_the_times_of_COVID-19_May_30_Web_test_page.pdf

Azim Premji Foundation (2020), Field Research Group, Anecdotes from qualitative interviews conducted as part of an unpublished study on Remote Learning.

Chomal, A. 2020, *'Assessment Issues, Challenges and Solutions- in COVID 19 Pandemic'*, panel presentation, 2nd Annual (online) Conference, *Theme- Mathematics Education during the pandemic- Issues, Challenges and Possible Solutions*, 5-6 September.

Department of State Education Research and Training, Karnataka, Learning Outcomes for Parents, Students and Teachers, 2018-19, downloadable at http://www.dsert.kar.nic.in/easp/learning_material.asp



आँचल चोमल पिछले 14 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ हैं। वे रिसर्च एंड असेसमेंट विभाग की प्रमुख हैं। वे शिक्षा में अनुभवजन्य अध्ययन और विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशिक्षकों और शिक्षण संस्थानों के लिए आकलन सम्बन्धी समाधान (रूपरेखा, उपकरण, पाठ्यक्रम, परामर्श) प्रदान करती हैं। उन्होंने सेंटर फॉर स्टडीज़ इन रीजनल डेवलपमेंट, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से भूगोल में स्नातकोत्तर और कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से भूगोल में स्नातक डिग्री प्राप्त की है। उनसे **aanchal@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल